

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/

स्वात स्वर से कि ज्या श्वाह मवा गर के से बाह क्षा पा हवे में ते तह वह स्पूर्य भो नरम् ते हु स्वर सक्ष व्याप मिला का स्वाह का श्वाह का स्वर का

Acc. No. 102H- M-1879
Title - Zerry anoy daily.
Author -?
Date -?
Sub - Medicine.
folio - 9
Xerox - Z



भारता वहुण तिथा पहें में दे के के वहुण के कार्य के कार के कार्य के कार कार के कार के कार के कार के कार्य के कार्य के कार्य के कार्य के का

स्वणा तका लेगल्ड इट जल्ब मंत्र जगिरणा विद्यां निर्धित स्व व व वे कि तास स्वेराव जांगी समिति है निर्धित विद्यां के कि तार हे स्व पार व की कि तास है से स्व पार के के कि तास है से कि व के कि तास है से कि व कि तास है से कि कि तास है से कि कि तास है से कि तास है से कि कि तास है से कि तास है से कि तास है से कि तास है से कि कि तास है से कि कि तास है से कि कि तास है से कि तास है कि तास है से कि तास है कि त

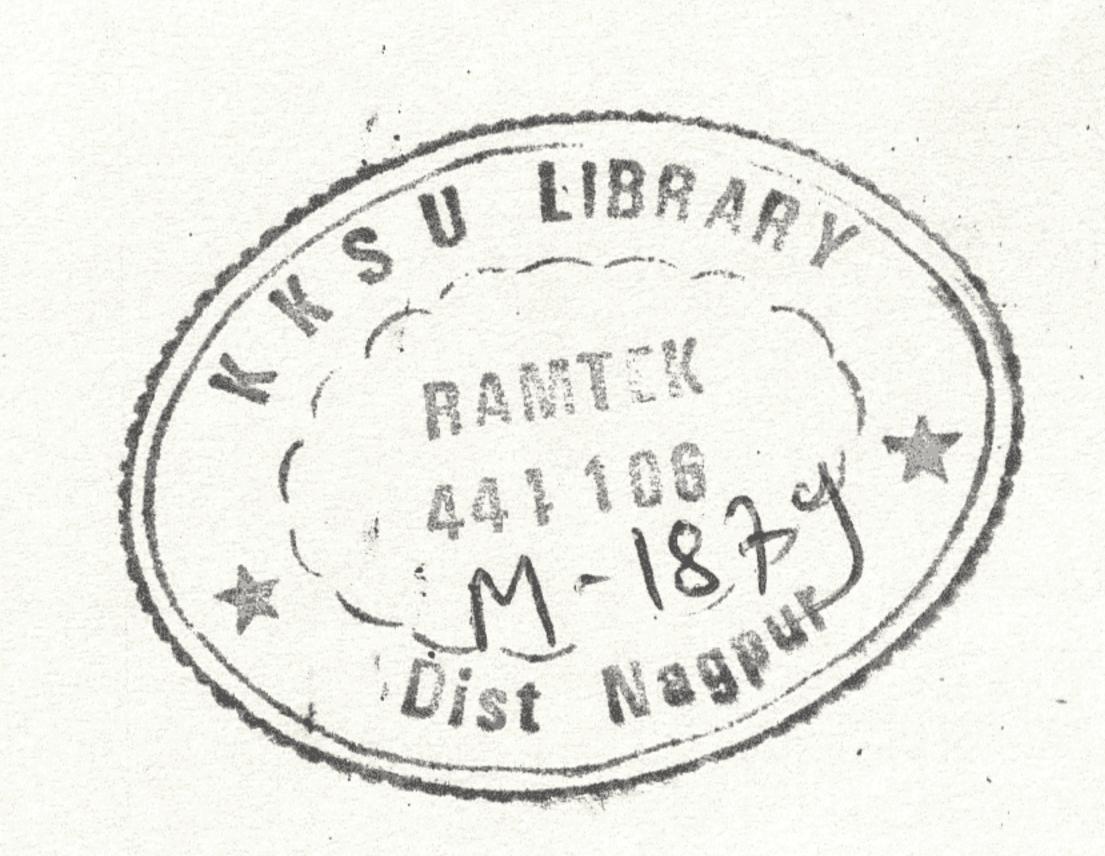
भी विश्व के प्रति के स्वास मुख्याम इतिपश्य यु एपा दे ह पि हा में एवप आरणं यु एपा दे ने से हि में प्रति के से प्रत

अनियाम्

हवाइ हिल्ला हा मादनस्ता १ शहर अरविस्विता यां सहितायां विकित्या जनस्वरल हिक् यना व्याय । णा शीर्य थाड्य गुर्गेन्तु सेप द्र व्यव विन्धेन स त्यात्रे क्षाण मे ग्याम क मांसाव शिवतम् त ज्व वं पाय ये कि मान के मिंग क जितम श्टति क्षाण इसाम श्विनि हिष्मित गणते आहार रससंगा देसं जाते हिण देशिमतम र पहने साम देशे निष ते हा थे से वादितम् क्षाचे सिपे सिमेमे श्रेवत क्षाक महो। इसे श्रे वात वि नव का ने के विषित्तम अस्टतम् अरिक गणनं न्हारं स वसंविधानम् हिगानवह सेववधालेशात्मात्मितं स्ति ग्रं ते त्र में श्राम् वान्य स्ति सामेश नित्ति केविस् मिनाम स्य पा गुन्दी धाय बारि धपत्म वे हर-स्वर् में है गुन्दिन मा हला पश्सवन्वर् हरस्मण ह रीयनोदाहहरतामत साक्ष्यन्यां नियत गुज्यादिक्षाथ गुन्द् वीषिष्य तीम्ल मार्गरेष्यायने परम्द्वा हान ज्यरे देनिति जेस प्रमासारे गुड् खादिकार्थि गुड् बादिषायनस् वानज्येरे शासिषमीय अहा नाग इ.वीसा हिंगतथा मासंक्षापं विवेत् के संतिववातं चर छिदम् शादिव नादि । अवस्तिमारि वा मुन्सा माप मार्गाम नामया उषाव 8 म गड 8 वी ने। वा त जर वि नाश्व 8 को श्म व्या दि । उप में लेड् व वा दिस ति नरां म से । श्रतन लम् वायनं दश्मेश्नि स्वानी ब्रे विन नचरे रहरणाम् क एक भादिपायन विन नचरे पर्वा है। यास्क सिन

व्यास्त्र १

केराने। धन्यभवास्य हे जियद्भवस्त क्षाय 8 वर्षात 8 साथ 8 वर्षात हिंदा साम् विवासाम् विवासाम विवासाम् विवासाम विवास विवासाम विवासाम वर्षादि दान्ताहरीनकी मुस्त कड़ का हतमा अवह वर्षादश्वह तह हो ज ए वा वि ने ज्व मावह है स्ट म हा का ता मा सर्वश्मनोभेदनस्य ति द्रान्साह जीव जान्य शिष्णाप थ्या नारा र जिल्लिस सन्तार्पावन थले क्या ज्य रेवादश्वासरे की असराहणाय न श्लेषा ज्वरे भितिन्व निन्विष्णा अस्वीश्वास्त्र श्रम्बी यह नेपंगतिष्मन्यर्षिहस् पंवभद्रस् नुद्राशुन्धिगद्रवीनं द्रषापि वेपा लेखे ज्वरेवापि शिवाचने कास्व्वासान्य करे पार्वंश्रुते विधावित त्र प्रमुद्ध आरं विधानित । म्सातिन्ता भणाह्न १ द्वाण १ श्रामय तिन्ति वे उर्वे र्वाम य के प्रवास साम १ देव प्रवास ने प्रवास वन 8 सार्य जादि सम्बत्ति रिछं र प्रवासिंद् वय नागरे 8 परे। उत्यन्ना जोव विष भी दर्श सर्वत्र स्र मा ब असे नह विनश्तेषा अवर पहुं के देरे व ब हे तास हर र हा। विवाद राम से का मांच व हों 3



,CREATED=20.10.20 15:51
,TRANSFERRED=2020/10/20 at 15:52:41
,PAGES=7
,TYPE=STD
,NAME=S0004246
,Book Name=M-1879-SWARASH KALPKVATH
,ORDER\_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000007.TIF

[OrderDescription]